सितंबर १९९३ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

बुद्ध और बिंबिसार

कौमारभृत्य

भारत के जनपदों में गणिकाओं की परम्परा तो पुरानी रही होगी, परंतु राज्य द्वारा किसी को सर्वश्रेष्ठ सुंदरी घोषित कर जनपदकल्याणी के पद पर आसीन करना और राज्य की ओर से उसका एक रात का मूल्य निर्धारित किया जाना, यह लगता है २५०० वर्ष पूर्व के भारत की अपनी विशेषता थी। अनेक जनपदों में जनपदकल्याणी का पद जनपदों के लिए शोभनीय माना जाता था, गर्व का विषय माना जाता था।

राजगृह का निगमपति जब पहली बार पड़ोसी देश की वैभवशाली राजधानी वैशाली हो आया तो उसे वहां की दो बातों ने बहुत आकर्षित किया। एक तो वहां के ७,७७० राजाओं के ७,७७० राजमहल, उतने ही कोष्ठागार, उद्यान और पुष्करणियां। इन सब ने वैशाली के भौतिक वैभव को आसमान पर चढ़ा दिया था। दूसरी परम सुंदरी जनपदकल्याणी अम्बपाली, जिसके कारण वैशाली अपने विलास वैभव के लिए प्रसिद्ध हो गई थी।

बिंबिसार ने जब यह सारा ब्यौरा सुना तो उसे पहले क्षेत्र में प्रतिद्वंद्विता असंभव लगी, क्योंकि राजगृह में एकतंत्री शासन था। अतः एक ही राजा था। वह अपने लिए और अपने परिवार के लिए आखिर कितने महल बनवा सकता था? जबकि वैशाली जनतांत्रिक थी, वहां ७,७७० राजा थे। राज्य सम्पद ७,७७० राजाओं में बँटी हुई थी। एक-एक का एक-एक निवास स्थान हो तो इतने सारे महल, इतने ही कोष्ठागार, उद्यान, पुष्करणियां होनी स्वाभाविक थीं। ऐसा राजगृह में होना असंभव था। परंतु जनपदकल्याणी स्थापित की जा सकती थी। इस क्षेत्र में वह वैशाली से प्रतिद्वंद्विता कर सकता था।

उसने निगमपति को आदेश दिया कि मगध की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी कुमारी का चुनाव करे और नगर-गणिका बना कर उसका मूल्य वैशाली से दुगुना निश्चित कर दे। यही किया गया। शालवती नाम की एक कुमारी को चुना गया जो अम्बपाली जैसी ही अनिंद्य सुंदरी थी। उसे नृत्य, वाद्य, गायन में प्रवीण करके नगरवधू घोषित किया गया। वैशाली राज्य ने अम्बपाली की एक रात की कीमत पचास मुद्राएं निश्चित कर रखी थी। मगध नरेश ने शालवती की एक रात की कीमत एक सौ मुद्राएं निश्चित की।

धीरे-धीरे नगरवधू के रूप में शालवती की प्रसिद्धि फैलने लगी। कुछ समय पश्चात शालवती को गर्भ रह गया। वह चिंतित हुई। पुरुष लोग गर्भिणी से सहवास नहीं करना चाहते। अतः उसने अपनी द्वारपालिका को समझाया कि उसके लिए द्वार पर कोई आये तो कह दे कि शालवती बीमार है। यों बीमारी का बहाना बना कर उसने गर्भावस्था का समय बिताया। समय बीतने पर उसने एक पुत्र प्रजनन किया। अब उसे चिंता हुई कि संतान वाली नारी को भी पुरुष कम चाहते हैं। अतः हृदय को कठोर करके अपने पुत्र के परित्याग का निर्णय किया। उसने धाय को आदेश दिया कि नवजात शिशु को चरे की टोकरी में रख कर बाहर गली के नुक्कड़ पर कूड़े के ढेर के पास रख आये। धाय ने ऐसा ही किया।

प्रातःकाल अभय राजकुमार महाराज बिंबिसार की सेवा में जाने के लिए उस ओर से निकला। उसने देखा, कूड़े के ढेर पर बहुत से कौवे मँडरा रहे हैं और किसी शिशु के रोने की आवाज आ रही है। उसने अपने सेवक को जांचने के लिए भेजा तो परित्यक्त बालक प्रकाश में आया। कौवों के आक्रमण के बावजूद भी वह जीवित है, यह देख कर अभय राजकुमार ने उसका नाम जीवक रखा और उसके यथोचित पालन-पोषण के लिए उसे अपने महलों में भेज दिया। उसने जीवक को बड़े प्यार से पाला। इसलिए कुमार का पौष्य पुत्र होने के कारण उसका एक नाम और पड़ा –कौमारभृत्य।

बड़ा होने पर जीवक ने जानना चाहा कि उसके माता-पिता कौन हैं। अभय ने कहा कि मैं तुम्हारा पिता हूं, परंतु माता कौन है, मैं नहीं जानता। एक मान्यता यह भी है कि वह शालवती की कोख से उत्पन्न हुआ अभय का ही पुत्र था। अभय जीवक को गणिका का पुत्र घोषित नहीं किया चाहता था। अतः उसने मां का नाम छिपाया। अथवा यह भी हो सकता है कि अभय को उसकी माता कौन है, इसका ज्ञान सचमुच न रहा हो। जो भी हो, वह अभय राजकुमार का वास्तविक पुत्र न भी हो, उसका पौष्य पुत्र तो था ही। अतः महाराज बिंबिसार का भी पौष्य पौत्र हुआ।

जीवक बड़ा हुआ तो उसने देखा कि राजा के सम्पर्क में जो लोग हैं, वे किसी न किसी विद्या में निपुण हैं। गुणहीन व्यक्ति की वहां कोई कदर नहीं है। अतः उसने कोई शिल्प सीखने का निर्णय किया। उन दिनों तक्षशिला का विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध था। वहां अनेक प्रकार के शिल्प सिखाये जाते थे। अतः वह अभय राजकुमार को बिना कुछ कहे तक्षशिला की ओर चल पड़ा। वहां पहुँच कर वह आयुर्वेद विषय के दिशा-प्रमुख आचार्य मे मिला। आचार्य ने देखा कि युवक मेधावी है। उसे चिकित्सा-शास्त्र सीखने की अनुमति मिल गई।

जीवक मेधावी भी था और परिश्रमी भी। सात वर्ष तक निष्ठापूर्वक चिकित्सा-शास्त्र की विद्या पढ़ता रहा और साथ-साथ उसका व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करता रहा। सात वर्ष पश्चात वह अधीर हो उठा। उसने आचार्य से कहा कि इस विद्या का तो अंत ही नहीं दीख रहा है। आचार्य ने उसकी योग्यता जांचने के लिए कहा कि वह फावड़ा लेकर आस-पास की एक योजन भूमि की जांच कर आये जहां कोई अभैषज याने बिना औषधि के गुण वाला पौधा मिले, उसे उखाड़ लाये। जीवक चल दिया, उसने बताई हुई सीमा की धरती जांच कर देखी। वह खाली हाथ लौट आया और बोला कि उसे बिना औषधि का एक भी पौधा नहीं मिला। सभी पेड़ पौधों में किसी न किसी औषधि के गुण विद्यमान हैं। आचार्य इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ। यह जीवक की परीक्षा थी। वह इस परीक्षा में सफल हुआ। शिष्य की परिपक्व योग्यता देख कर आचार्य संतुष्ट हुआ। उसने कहा –अब तुम्हारी शिक्षा पूरी हुई। घर लौट सकते

हो। जो सीखा है उससे अपनी जीविका बखूबी चला सकते हो। आचार्य जानता था, जीवक के पास गुरु-दक्षिणा देने के लिए कुछ नहीं है। अतः उसने प्रसन्न होकर अपने योग्य शिष्य से कोई दक्षिणा न मांग कर, उल्टे उसके पथ के लिए थोड़ा सा पाथेय दिया और उसे विदा किया।

जीवक तक्षशिला से मगध की ओर चल पड़ा, परंतु पाथेय बहुत अल्प था। साकेत पहुँचते-पहुँचते समाप्त हो गया। अभी बहुत लंबा रास्ता था। अतः उसने निर्णय किया कि वहीं कुछ दिन रुक कर किसी रोगी की चिकित्सा करे और राह-खर्च लायक कुछ धन कमा ले। नगर में रोगी की खोज में निकला तो पता चला कि साकेत के नगरसेठ की भार्या सिर-दर्द के रोग से पीड़ित है। अनेक वैद्यों ने उसकी चिकित्सा की पर कोई सफल न हुआ। जीवक नगरसेठ के द्वार पर गया। उसने द्वारपाल को अपना परिचय दिया और सेठानी की चिकित्सा करने की उत्सुकता दिखाई। द्वारपाल ने भीतर जाकर सेठानी को यह सूचना दी। परंतु द्वारपाल से पूछने पर जब सेठानी ने यह जाना कि आगंतुक वैद्य युवा है तो वह अन्यमनस्क हुई। उसने कहा, सात वर्ष पुराना रोग है। अनेक अनुभवी और वयोवृद्ध वैद्य बहुत सा धन मेहनताने के रूप में लेकर चले गये पर इलाज करने में कोई सफलता नहीं हुआ। यह युवा, अनुभवहीन व्यक्ति क्या चिकित्सा करेगा? व्यर्थ धन क्यों बरबाद करें?

द्वारपाल ने जब यही बात जीवक को आ सुनाई तो जीवक ने कहा, मुझे कोई अग्रिम पारिश्रमिक न दें। जब ठीक हो जाएं तो ही पारिश्रमिक दें और वह भी जो चाहें उतना ही दें।

यह सुन कर सेठानी ने जीवक को भीतर बुला लिया। जीवक ने रोग की जांच की और चिकित्सा के लिए पसर भर घी मांगा। उसे घी मिला। उसने घी में कुछ एक औषधियां मिला कर उसे पकाया और सेठानी को चित्त लेटा कर उसके नथुनों में डाल दिया। नाक में डाला गया घी मुँह के रास्ते से निकल पड़ा। सेठानी ने उसे पीकदान में थूका और दासी को हुक्म दिया कि उसे किसी बर्तन में रख ले, काम आयेगा।

जीवक यह देख कर बहुत उदास हुआ। जो सेठानी इस गंदे घी को फिंकवाती नहीं बल्कि बर्तन में रखवाती है, वह कितनी कृपण है। ठीक होने पर मुझे क्या मेहनताना देगी? इस घी में मेरी कीमती औषधियां पड़ी हैं, उतना पारिश्रमिक पाना भी कठिन दीखता है। सेठानी जीवक के मन के भाव ताड़ गई। उसने जीवक को समझाया कि वह एक श्रेष्ठि-भार्या है, कुशल गृहिणी है। किफायतगिरी और संयम उसमें कूट-कूट कर भरा होना स्वाभाविक है। किसी भी काम की वस्तु को फेंकना नहीं देना चाहिए। यह मैला घी खाने के काम नहीं आयेगा परंतु दास-दासियों के पैर मलने के काम आ सकता है, दीपक जलाने के काम आ सकता है। इसीलिए बर्तन में रखवाया है। तुम चिंता न करो, यदि मैं निरोग हो गई तो तुम्हारे पारिश्रमिक में कमी नहीं आयेगी।

और वह निरोग हो गई। सात वर्ष का पुराना रोग जीवक के एक ही बार के उपचार से दूर हो गया। सेठानी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने जीवक को चार हजार मुद्राएं दी। मां को रोग-मुक्त देख कर पुत्र बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी ओर से जीवक को चार हजार मुद्राएं दी। सास को स्वस्थ हुआ देख कर बहू बहुत प्रसन्न हुई। उसने अपनी ओर से जीवक को चार हजार मुद्राएं भेंट दी। पत्नी को स्वस्थ-प्रसन्न देख कर श्रेष्ठि आल्हादित हुआ। उसने जीवक को चार हजार मुद्राएं ही नहीं दी, एक दास और एक दासी भी दी और यात्रा के लिए अश्व-जुड़ा एक रथ भी प्रदान किया।

इतना सारा धन लेकर जीवक राजगृह लौटा। अपनी शिक्षा की पहली कमाई पिता अभयकुमार को समर्पित करके उसे नमस्कार किया। अभय राजकुमार उसे वापिस आया देख कर अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसकी प्रथम कमाई उसी को लौटाते हुए बोला – मेरे महल के अहाते में ही घर बना कर रहो। जीवक वहीं घर बनवा कर रहने लगा। उस कमाई का कुछ हिस्सा तक्षशिला में अपने आचार्य को भिजवा दिया।

उन दिनों महाराज बिंबिसार को भगंदर का रोग था। धोतियां खून से सन जाती थी। अंतःपुर की मुँहलगी रानियां उपहास करती, इस समय महाराज को ऋतुकाल आया है, महाराज रजस्वला हुए हैं। अब महाराज को फूल उत्पन्न हुआ है, जल्द ही महाराज प्रसव करेंगे, आदि-आदि।

महाराज बिंबिसार बड़ा लज्जित होता। पर क्या करता? लाचार था। उसने अभय राजकुमार से कहा कि कोई अच्छा वैद्य ढूंढ कर लाए जो उसका उपचार कर सके। अभय राजकुमार ने तरुण जीवक की चिकित्सा कराने का सुझाव दिया। महाराज ने स्वीकृति दी। जीवक ने चिकित्सा की। एक ही लेप द्वारा भगंदर का पुराना रोग ठीक हो गया।

महाराज ने प्रसन्न हो पांच सौ नारियों को नख-शिख तक अलंकृत कर, वह सारे आभूषण-अलंकार उतरवा जीवक को पुरस्कारस्वरूप दे दिये।

जीवक ने कहा –आप मेरे उपकार को स्मरण करें, यही मेरे लिए पर्याप्त है।

इस पर महाराज बिंबिसार ने जीवक से कहा –आज से तुम मेरी और मेरे रनिवास की तथा भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुसंघ की सेवा-चिकित्सा करो।

यों बिंबिसार का पौष्य पौत्र जीवक भगवान के संपर्क में आया। उन दिनों का वह प्रसिद्ध भिषक महाभिषक भगवान बुद्ध के सम्पर्क में आया। भगवान के सम्पर्क में आया तो शुद्ध धर्म के सम्पर्क में आया। उसका भाग्योदय हुआ। उसका मंगल सिद्ध हुआ।

मंगल मित्र,
स. ना. गो.

साधकों के उद्गार

मेरे अनुभव

डॉ. शिवमुनि

इस साधना के द्वारा मानसिक समता की पुष्टी हुई। राग, द्वेष, मोह इत्यादि की तरंगें जानने की अनुभूति हुई। किसी को दोष न देते हुए अपने भीतर जानने की विधि मिली। अचेतन मन में राग, द्वेष की ग्रंथि का स्पष्टीकरण हुआ। आस्रव, संवर, निर्जरा, कर्मों की

उदीरणा कैसे होती है; इसकी अनुभूति हुई। महासतिपट्ठान सुत्त शिविर में विपश्यना की गहराई जानने को मिली। इस शिविर में आचार्य श्री गोयन्काजी ने विपश्यना के गूढ और आधारभूत सूत्रों का सूक्ष्म विश्लेषण करके समझाया। कठोर अनुशासन और करुणा, मैत्री का आश्चर्यजनक अनुभव रहा। आपके सारे प्रवचन प्रज्ञा से भरे हैं, सत्य और प्रेम से परिपूर्ण हैं। हृदय और मस्तिष्क दोनों के धरातल को स्पर्श करते हैं। आपके दोहे संत कबीर की तरह गागर में सागर ज्ञान-सिंधु को लिए हुए, हृदय पर मार्मिक चोट करते हैं। अपनी व्यस्तता की ओर ध्यान न देते हुए आपने मुझे बहुत समय दिया, इसके लिए मैं उपकृत हूं।... धम्मगिरि का शांत वातावरण, प्राकृतिक रम्यता और स्वच्छता अनुकरणीय हैं। सभी कार्यकर्ता समर्पित भाव से धर्मसेवा में रत है। गंभीर अनुशासन संहिता ध्यान साधना के लिए सहायक हैं।...

इंदौर से श्री मानवमुनिजी लिखते हैं, "धर्म तो मानव के हृदय को जोड़ता है, पर आज मानव दानव बनता जा रहा है। राजनैतिक स्वार्थ के कारण देश-दुनिया में हिंसा का तांडव नृत्य चल रहा है। आज देश हिंसा की आग में झुलस रहा है।... उससे बचाने का एक ही मार्ग है विपश्यना। हजारों की संख्या में जिन्होंने भी विपश्यना ध्यान शिविर में भाग लिया है, वे हिंसा से दूर रहे। करफ्यू में भी साधना करके आत्मानुशासन का अनुभव किया। विपश्यना ध्यान रूपी अध्यात्म के बिना मानवता बचेगी नहीं। सत्ता, संपत्ति-भोग सब के विनाश के मार्ग हैं। यह नशा है। जैसे शराबी नशे में अपने कर्तव्य को भूल जाता है, उसी प्रकार सत्ता के नशे में मनुष्य अपने कर्तव्य और मानव धर्म को भूल जाता है। देश-विदेशों में, विद्यालय-महाविद्यालयों और विश्व विद्यालयों में भी विपश्यना ध्यान शिविर की आवश्यकता है।

मेरा विपश्यना ध्यान का क्रम प्रतिदिन चल रहा है जिससे शांति है। जीवन का सच्चा आनंद इसी में है।

डोरसेट, इंगलैंड से श्री नारायणदास और मीना सापड़िया लिखते हैं,

"हम दोनों नवंबर-दिसंबर मास में कनाडा और अमेरिका गये। हमारी बड़ी पुत्री फ्रिना मांटिरल, कनाडा में है। अपने पति के साथ दो साल पहले एक शिविर 'धम्मधरा' में किया था, लेकिन बहुत लाभ नहीं मिल पाया। छोटी पुत्री निशा सिआटल, अमेरिका में बसी है। इन्हें हमने बचपन से गीता का पाठ पढ़ाया था, जो मात्र बुद्धि-विलास ही रह गया। चार साल पहले जब हमें विपश्यना मिली तब से दोनों को धम्म से प्रेरित करते रहे, पर दोनों उग्र भाव से प्रतिक्रिया करतीं।

इस बार हमने निर्णय किया कि विपश्यना के बारे में एक शब्द भी नहीं बोलेंगे। लेकिन हम दोनों का नियमित सुबह-शाम दो-दो घंटे ध्यान में बैठना और हमारे स्वयं के स्वभाव में परिवर्तन देख करये प्रभावित हुए और विशेष कर इसी समय इसकी फ्रेंच मित्र लड़की 'लोरेन' विपश्यना के बारे में जानने आयी। हमने उसे गुरुश्री का पत्र दिखाया, प्रवचन की टेप सुनाई और बाद में थोड़ा कुछ समझाया। इससे प्रभावित होकर फ्रिना ने भी दिसंबर में धम्मधरा में शिविर कर के बहुत लाभ पाया और 'लोरन' ने तो तीन शिविर कर लिए। वहां से छोटी पुत्री निशा के यहां सिआटल जा पहुँचे।

निशा ने गत वर्ष भारत के बालाश्रम से एक अनाथ बालिका 'सुखी' को दत्तक लिया था, जो अब दो साल की हुई। हम सब वहां धम्मकुंज केन्द्र में गये। वहां पुराने साधक-साधिकाओंसे मिलकर, सब के करुणामय स्वभाव देखकर हम सब बहुत प्रभावित हुए। ऐसे कृपालु प्रेम से भरपूर मानवी भाव किसी सांप्रदायिक संस्थान में नहीं देखा था। केंद्र पर गुरुजी का प्रवचन विडियो पर सुना तो उसी क्षण निशा का पति, उसका मित्र और निशा ने शिविर में जाने का निर्णय कर लिया। हम दोनों सुखी को सँभाल सकते थे। लेकिन 'धम्मकुंज' में दिसंबर का शिविर फुल हो गया था। सहायक आचार्य बाब एवं जिनी जेफ के प्रयास से दूसरे छः भारतीय भाई बहनों सहित इनको वांकूवर-शिविर में स्थान मिला। सब खुश हो गये। उस समय हवामान बहुत अच्छा नहीं था। बरफ की दो फुट वर्षा पड़ी। इतनी ठंढ में बरफ पर चलकर धम्मा हॉल और भोजनालय में जाना पड़ता। इतनी कठिनाइयों में भी निशा ने न केवल सफलता से शिविर पूरा किया, बल्कि इतनी गहन डुबकी लगाई कि कल्याण हो गया। बोली नया जन्म मिल गया। सत्य का दर्शन हो गया।

हम दोनों को बहुत आंतरिक खुशी हुई, दोनों बेटियों को धर्म मिल गया, हमारी यात्रा सफल हो गई, हम भाग्यशाली हो गये।

पश्चिम में विदेशी भारतीय शिविर में जाना चाहते हैं, लेकिन अवकाश की तंगी होती है। साल में दो छुट्टी मिलती है। गुरुजी के विडियो प्रवचन का गहरा असर पड़ता है।"

पूज्य गुरुजी के शिविर-प्रवचन 'जी' टी.वी. पर

प्रत्येक **रविवार की प्रातः ७:३०** बजे 'जी' टीवी पर **"जागरण"** नाम से आधे घंटे के लिए पूज्य गुरुजी के सभी शिविर-प्रवचन प्रसारित होने आरंभ हुए हैं, जो लगभग ३३ कड़ियों में समाप्त होंगे। साधक अपने स्नेहीजनों को इनका लाभ लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

आवश्यकता है

विपश्यना साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न भाषाओं में इनका अनुवाद आरंभ हो गया है। अब तक कई पुस्तकें और पत्रक हिंदी और अंग्रएजी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम, सिंधी, उर्दू तथा बरमी और विदेश की अन्य कई भाषाओं में भी छप चुके हैं। अभी बहुत काम बाकी है। अतः इस बहुजन-हितकारी कार्य में अनेकानेक धर्मसेवकों की आवश्यकता है, जो अनुवादक एवं प्रूफ-रीडर के काम में निपुण हों और रुचिवान हों। संपादन एबं ट्रांसक्राइबिंग करनेवालों की भी आवश्यकता रहेगी ही। घर पर या धम्मगिरि पर काम करने के इच्छुक भाई बहन **प्रकाशन विभाग**, वि.वि.वि., धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३. से संपर्क करें।

विपश्यना साधना की पथ-प्रदर्शिका

साधकों को घर पर दैनिक अभ्यास में आने वाली कठिनाइयों एवं प्रश्नों को ध्यान में रख कर पूज्य गुरुजी ने साधकों के लाभार्थ एक निर्देशिका तैयार करने की अनुमति दी जो कि उक्त नाम से हिंदी में सद्यः प्रकाशित हुई है। अंग्रएजी में भी शीघ्र छप रही है। सभी साधकों की सुविधा के लिए इसका मूल्य मात्र रु. १ - रखा गया है।